ISSN 2581-9917

उम्मीद

पूजा गुप्ता*

उम्मीद से भरी आँखें,
देखती हैं
रास्ता किसी का,
वो जो आए
प्यार से सहलाए,
न देखे नफरत से
अगर न अपनाए।

लाखों सपने देखता मन,
पूरे होने की आशा लिए,
पर नींद से जागते ही
टूट जाते सपने,
सच के सामने
हार जाता झूठा स्वप्न,
हकीकत के सामने
दूर हो जाता सारा भ्रम।

फिर चल देता बचपन,
उन्हीं पथरीली राहों पर,
कुछ पाने की आशा को
भुलाकर,
अपनी सभी इच्छाओं को
दबाकर,
जिंदगी का करने
सामना,
जहाँ हर ठोकर पर
उसे खुद ही है संभलना।

है वह जख्मों से दूर जहाँ,
पर सदा काँटों के पास,
खुले आसमान के नीचे भी,
है कैद का आभास।

चारों ओर उजाला
पर मन अँधेरों में पलता,
पत्थरों की डगर पर
जहाँ बचपन चलना सीखता।

* असिस्टेंट प्रोफेसर (वनस्पति विज्ञान), रामजस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय।